Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

बिहारी हिन्दी उपभाषा के लोकगीतों के सांस्कृतिक महत्व पर विवेचनात्मक अध्धयन

[1]प्रियंका पटेल, [2]शाहीन परवीन, [3]स्नेह दीक्षित, [4]डॉ.अजय शुक्ला
[1,2,3]बी.ए.षष्टम सेमेस्टर
[4]प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
[1,2,3,4]कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)
[4]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

शोध सारांश :- बिहारी हिन्दी भाषा भारतीय आर्यभाषा की एक महत्वपूर्ण शाखा है। वैदिक काल से लेकर अभी तक इसका गौरवशाली इतिहास रहा है। बिहारी हिन्दी में प्रमुखत: भोजपुरी, मैथिली,मगही और अंगिका एवं बज्जिका सम्मिलित हैं। विकिपीडिया के अनुसार 70 करोड़ से अधिक लोग इस भाषा को बोलते-लिखते-समझते और प्रयोग करते हैं। बिहारी हिन्दी भाषा के लोकगीतों में न सिर्फ सामाजिक चेतना बल्कि सांस्कृतिक चेतना का विकास होता रहा है। बिहारी हिन्दी के अंतर्गत भोजपुरी हिन्दी भाषा की ऐसी एकमात्र उपभाषा है जो भारत में नहीं बल्कि विदेश में छ:से अधिक देश की राजभाषा के रुप में प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बिहारी उपभाषा के परिचय को रेखांकित करते हुए उसके इतिहास पर नये सिरे से मूल्यांकन किया गया है।इसके अतिरिक्त वहां पर प्रचलित लोकगीतों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हुए प्रमुख चुनौतियों की विवेचना की गयी है।

बीज बिन्दु : - बिहारी उपभाषा, भोजपुरी लोकगीत, मैथिली लोकगीत,मगही लोकगीत, अंगिका एवं बज्जिका गीत, सांस्कृतिक महत्व, चुनौतियां।

प्रस्तावना :- बिहारी उपभाषाएँ हिन्दी भाषा की एक प्रमुख शाखा हैं, जो मुख्यत: बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में प्रचलित हैं। ये उपभाषाएँ भारतीय आर्यभाषा परिवार का हिस्सा हैं। बिहारी उपभाषाओं में भोजपुरी सबसे व्यापक और लोकप्रिय बिहारी उपभाषा है।जो मुख्यत:पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड और नेपाल के तराई क्षेत्र में बोली जाती है। यह अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा और लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है। जबकि मगही उपभाषा मध्य और दक्षिणी बिहार (जैसे गया, पटना, औरंगाबाद) में बोली जाने वाली प्रमुख लोकप्रिय

उपभाषा है। इसका साहित्यिक इतिहास प्राचीन है, और यह मगध क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी हुती है।

इसके अतिरिक्त तीसरी सबसे लोकप्रिय उपभाषा मैथिली हैजो उत्तरी बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित है। मैथिली को 2003 में भारत की संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया है। जिससे भारतीय संविधान में इसे स्वतंत्र भाषा का दर्जा मिल चुका है। इसमें समृद्ध साहित्य और वैदिक परंपराएँ हैं। बिहारी भाषा के अंतर्गत अँगिका और बज्जिका उपभाषाएं प्रचलित हैं। जिसमें अंगिका बिहार के भागलपुर, मुंगेर और झारखंड के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। जबकि वज्जिका बिहार के वैशाली और मुजफ्फरपुर जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है। यह मैथिली और भोजपुरी के बीच की कड़ी मानी जाती है।बिहारी उपभाषाएं का एक गौरवशाली इतिहास है। लोकभाषा के रुप में इन उपभाषाएं में लोकगीतों की समृद्ध परंपरा है।जिसका सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुप से महत्व अक्षुण्ण है।

1.बिहारी हिन्दी उपभाषा का इतिहास

बिहारी उपभाषाएँ,जिन्हें हिन्दी भाषा की क्षेत्रीय शाखा के रूप में माना जाता है। उसकका इतिहास प्राचीन भारत की भाषाई और सांस्कृतिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। बिहारी उपभाषाएँ (भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, वज्जिका) भारतीय आर्यभाषा परिवार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।इनका विकास संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश जैसी भाषाओं से हुआ है।

(क)प्राचीन काल और उत्पत्ति (500 ई.पू. - 500 ई.):-

बिहारी उपभाषाओं में संस्कृत और प्राकृत का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इनकी जड़ें संस्कृत में मिलती है।जो उस समय वैदिक और शास्त्रीय साहित्य की भाषा थी।विदित हो कि मगध क्षेत्र (आधुनिक बिहार) प्राकृत भाषाओं का केंद्र था। जहां पर विशेष रूप से मागधी प्राकृत प्रचलित थी।जो बौद्ध और जैन ग्रंथों में प्रयुक्त होती थी।मागधी प्राकृत को बिहारी उपभाषाओं में, विशेष रूप से मगही और मैथिली का प्रारंभिक रूप माना जाता है। बौद्ध एवं जैन धर्म के धार्मिक प्रचार में भी भी मागधी प्राकृत भाषा का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखलाई पड़ता है।

(ख)अपभ्रंश का उदय (500 ई. - 1000 ई.):-

प्राकृत से अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है।जो मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का आधार बनीं। बिहार में बोली जाने वाली अपभ्रंश बोलियाँ बिहारी उपभाषाओं की नींव बनीं।इस

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

काल में मिथिला और मगध क्षेत्रों में साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का स्वर्ण युग था।जो मैथिली और मगही के प्रारंभिक रूपों को प्रभावित करती थीं।विदित हो कि उस वक्त नालंदा युनिवर्सिटी ज्ञान के केन्द्र के रुप में स्थापित था। भगवान बुद्ध के कर्मक्षेत्र के रुप में बिहार की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति थी। बौद्ध धर्म के प्रचार -प्रसार में मागधी अपभ्रंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(ग) मध्यकाल और साहित्यिक विकास (1000 ई. - 1800 ई.)

मैथिली का उदय:- मिथिला क्षेत्र में 14वीं सदी में मैथिली साहित्य का विकास हुआ। कवि विद्यापति (1350-1450) ने मैथिली में भक्ति और श्रृंगार रस के काव्य लिखे, जो हिन्दी साहित्य में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। उनकी रचनाएँ मैथिली को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करती हैं।मैथिली को मिथिला के राजदरबारों में संरक्षण प्राप्त था, जिसने इसे समृद्ध साहित्यिक परंपरा प्रदान की।

भोजपुरी और लोक साहित्य:-भोजपुरी ने मध्यकाल में लोक साहित्य के रूप में अपनी पहचान बनाई। यह विशेष रूप से भक्ति आंदोलन (15वीं-17वीं सदी) के दौरान कबीर, सूरदास और तुलसीदास जैसे संत कवियों के प्रभाव से विकसित हुई।कबीरदास बनारस के रहने वाले थे।उनकी बहुत सारी रचनाएं भोजपुरी उपभाषा में रचित है।

मगही और अन्य उपभाषाएँ: - मगही, जो प्राचीन मागधी प्राकृत से विकसित हुई थी। मध्यकाल में बौद्ध और जैन परंपराओं के साथ-साथ लोक साहित्य में स्पंदित होती रही। हालांकि इसका लिखित साहित्य मैथिली और भोजपुरी की तुलना में कम विकसित रहा है।इसी प्रकार अंगिका और वज्जिका जैसी उपभाषाएँ भी स्थानीय बोलियों के रूप में प्रचलित थीं। किन्तु इनका साहित्यिक विकास सीमित रहा।

(घ)आधुनिक काल (1800 ई. - वर्तमान तक) : -

औपनिवेशिक काल और मानकीकरण:- 19वीं सदी में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान हिन्दी को प्रशासनिक और साहित्यिक भाषा के रूप में बढ़ावा मिला। बिहारी उपभाषाएँ, विशेष रूप से भोजपुरी और मैथिली बहुत लोकप्रिय रहीं,लेकिन भाषा के इतिहास में इन्हें "हिन्दी की बोलियाँ" माना गया।भोजपुरी साहित्य को जॉर्ज ग्रियर्सन जैसे विद्वानों ने अपने भाषाई सर्वेक्षणों में प्रलेखित किया और इस भाषा को मुख्यधारा में लाने के लिए ग्रियर्सन ने बिहारी

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

उपभाषाओं को हिन्दी की शाखा के रूप में वर्गीकृत किया।कालांतर में हिन्दी साहित्य के आधार स्तंभ साहित्यकारों में प्रेमचंद, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, केदारनाथ सिंह आदि की रचनाओं में बिहार का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

बिहारी हिन्दी उपभाषा वर्ग की मैथिली भाषा में आधुनिक साहित्य का तेजी से विकास हुआ। इस भाषा क्षेत्र के लोगों द्वारा 20वीं सदी में स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता के लिए आंदोलन शुरू हुआ।वर्ष 2003 में मैथिली को भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया, जिससे इसे स्वतंत्र उपभाषा भाषा का दर्जा मिला। यह बिहारी उपभाषाओं के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था।

इसी प्रकार भोजपुरी उपभाषा ने 20वीं और 21वीं सदी में सिनेमा, संगीत, और प्रवासी साहित्य के माध्यम से वैश्विक पहचान बनाई। भोजपुरी फिल्म उद्योग आज इसकी सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है। भोजपुरी बोलने-समझने वालों की सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में बड़ी संख्या है।अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए यह भी भारतीय संविधान में स्वतंत्र भाषा के रुप में मान्यता के लिए आंदोलनरत हैं।अंगिका और वज्जिका को भी भारतीय संविधान में अभी तक स्वतंत्र भाषा का दर्जा नहीं मिला है, लेकिन ये स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखती हैं।

(च) भाषाई और सांस्कृतिक महत्व:-

बिहारी उपभाषाएँ हिन्दी की तरह देवनागरी लिपि का उपयोग करती हैं, लेकिन इनमें विशिष्ट ध्वनियाँ, शब्दावली, और व्याकरणिक संरचनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, मैथिली में संस्कृत का प्रभाव अधिक है, जबकि भोजपुरी में लोकप्रिय और सरल शब्दावली प्रचलित है। बिहारी उपभाषाएँ बिहार, झारखंड, और पूर्वी उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान का आधार हैं। ये लोकगीत, नाटक, और साहित्य के माध्यम से क्षेत्रीय इतिहास और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित करती हैं।बिहारी उपभाषाएं में विशेष रूप से भोजपुरी उपभाषा मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, और कैरिबियाई देशों में 19वीं सदी के गिरमिटिया मजदूरों के साथ फैली, जिससे इसकी वैश्विक उपस्थिति बनी।इसके अतिरिक्त लंबे समय से बिहार में पलायन की समस्या के कारण बिहारी समुदाय के लोग न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व के सभी हिस्सों में बसे हुए हैं।जो अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित बनाए रखे हुए हैं।

(2) बिहारी उपभाषा वर्ग के लोकगीत:-

बिहारी उपभाषाएँ अपनी समृद्ध लोकसांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध हैं और इनके लोकगीत इस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्रत्येक उपभाषा के लोकगीत अपनी विशिष्ट शैली, थीम और संगीतमय विशेषताओं के साथ स्थानीय जीवन, परंपराओं और इतिहास को दर्शाते हैं।

(क)भोजपुरी लोकगीत:-

भोजपुरी, बिहारी उपभाषाओं में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली उपभाषा है ।जो अपने जीवंत और भावपूर्ण लोकगीतों के लिए जानी जाती है। ये गीत ग्रामीण जीवन, प्रेम, विरह और सामाजिक मुद्दों को व्यक्त करते हैं। जिसमें कुछ प्रमुख लोकगीत इस प्रकार हैं:-

(अ)कजरी: वर्षा ऋतु से जुड़ा लोकगीत, जो प्रेम और प्रकृति की सुंदरता को दर्शाता है। इसे अक्सर सावन और भादो के महीनों में गाया जाता है। जैसे- "सावन के झूला, बरसे बदरिया...।"

(ब)चैता: चैत्र महीने में गाया जाने वाला गीत, जो प्रेम, भक्ति और प्रकृति के रंगों को व्यक्त करता है। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के द्वारा गाया जाता है।जैसे - चईत में लिहले राम जी जनमवां झूला झूले ले ललनवा...ए रामा।

(स)बिरहा: पुरुषों द्वारा गाया जाने वाला कथात्मक गीत, जो वीरता, प्रेम, और सामाजिक मुद्दों पर आधारित होता है। बिरहा में गायन के साथ ढोलक और हारमोनियम का उपयोग आम है।जैसे - "उठलैं जोबनवां नैहर के भवनवां,गवननां भयल दिन चार।"

(द)जतसार: खेती और फसल कटाई से जुड़ा गीत, जो सामूहिक कार्य के दौरान गाया जाता है। यह मेहनत और उत्साह का प्रतीक है।जैसे - "ए राम हरि मोरे गइले बिदेसवा, सकल दु:खवा देइ गइले हो राम। ए सासु, ननदिया बिरही बोलेली, केकर कमइया खइबू हो राम।"

(इ)सोहर: बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला गीत, जो खुशी और आशीर्वाद को व्यक्त करता है।जैसे - "जुग जुग जियसु ललनवा,भवनवा के भाग जागल हो,ललना लाल होइहे,कुलवा के दीपक मनवा में,आस लागल हो।"

इसके अतिरिक्त मांगलिक अवसर पर गाये जाने वाले गीत,भक्ति गीत, प्रकृति गीत,बाल गीत आदि अनेक प्रचलित गीत हैं।जो जनमानस में बहुत लोकप्रिय हैं।भोजपुरी लोकगीतों में सरल

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

शब्दावली और स्थानीय मुहावरे प्रचलित हैं।इनमें ढोलक, मंजीरा, हारमोनियम, और बाँसुरी जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है।भोजपुरी लोकगीत आज भोजपुरी सिनेमा और आधुनिक संगीत में भी लोकप्रिय हैं। हिन्दी सिनेमा में इन लोकगीतों से प्रेरित अनेक गीत हैं।जैसे - "नैन लड़ जइहें त मनवां में कसक होंगे करी... " जैसे गाने, जो पारंपरिक शैली से प्रेरित हैं।इसके अतिरिक्त भोजपुरी सिनेमा की विशिष्ट पहचान बन चुकी है।जिसे हिन्दी भाषी लोग भी चाव से देखते हैं। भोजपुरी लोकगीतों को पहचान दिलाने में भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिश्रा, शारदा सिन्हा,भरत शर्मा, कल्पना, मैथिली ठाकुर,चंदन तिवारी आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(ख) मैथिली लोकगीत :-

मैथिली, मिथिला क्षेत्र की प्रमुख उपभाषा है।जो अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है। ये गीत भक्ति, प्रेम, और सामाजिक रीति-रिवाजों से गहरे जुड़े हैं।इनके प्रमुख लोकगीतों में सामाचकेवा गीत ,जात-जाटिन गीत,बटगमनी गीत हैं।इसके अतिरिक्त मांगलिक अवसर पर गाये जाने वाले गीत,भक्ति गीत, प्रकृति गीत,बाल गीत आदि अनेक प्रचलित गीत हैं।

सामाचकेवा पर्व के दौरान गाए जाने वाले गीत को सामाकेचवा गीत कहते हैं।जो भाई-बहन के प्रेम और प्रकृति की सुंदरता को दर्शाते हैं। ये गीत मिट्टी की मूर्तियाँ बनाते समय गाए जाते हैं।जबकि जात-जातिन गीत,खेती और सामूहिक कार्यों से जुड़ा हुआ गीत है।जो सामाजिक सहयोग और मेहनत की भावना को प्रदर्शित करता है।इसी प्रकार बटगमनी गीत विवाह और उत्सवों में गाए जाने वाले गीत हैं।,जो हास्य और सामाजिक टिप्पणियों से भरे होते हैं।मिथिला क्षेत्र में भक्ति गीत की समृद्ध परंपरा है। जिसमें भगवान राम, सीता, और स्थानीय देवी-देवताओं (जैसे गंगा माता) की स्तुति में गाए जाने वाले गीत प्रचलित हैं। ये विद्यापति की भक्ति कविताओं से प्रेरित हैं।

मैथिली लोकगीतों में संस्कृत और प्राकृत का प्रभाव स्पष्ट है।इनमें काव्यात्मक शैली प्रचलित है।इन गीतों में मिथिला की चित्रकला (मधुबनी) और सांस्कृतिक परंपराओं का समावेश होता है।वाद्य यंत्रों में तबला, बाँसुरी, और खंजरी का उपयोग आम है। जबकि मगही लोकगीत मगही, मगध क्षेत्र की उपभाषा है जो अपने सरल और भावपूर्ण लोकगीतों के लिए जानी जाती है। ये गीत ग्रामीण जीवन और सामाजिक मूल्यों को दर्शाते हैं।प्रमुख लोकगीतों में फगुआ,जो होली के अवसर पर गाए जाने वाले वाला गीत है।यह रंग, प्रेम, और उत्साह को व्यक्त करता हैं।सोहर

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

बच्चे के जन्म पर गाए जाने वाले गीत है ।जो परिवार की खुशी और आशीर्वाद को दर्शाता हैं।रोपनी गीत ,धान रोपाई के दौरान गाए जाने वाले गीत है।जो सामूहिक मेहनत और प्रकृति के साथ जुड़ाव को व्यक्त करता हैं।इसके अलावा कथा गीत भी प्रचलित हैं।जो पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित गीत हैं।जो मगध की समृद्ध परंपराओं को दर्शाते हैं।

मगही लोकगीतों में स्थानीय मुहावरे और सरल शब्दावली का उपयोग होता है।इनमें ढोल, मंजीरा, और बाँसुरी जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है।मगही गीतों में बौद्ध और जैन परंपराओं का प्रभाव भी देखा जा सकता है।सांस्कृतिक महत्व:मगही लोकगीत मगध क्षेत्र की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं।ये गीत सामाजिक एकता और ग्रामीण जीवन की सादगी को उजागर करते हैं।

3.बिहारी भाषा के लोकगीतों का सांस्कृतिक महत्व :-

बिहारी लोकगीत, जो भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, और वज्जिका जैसी बिहारी उपभाषाओं में गाए जाते हैं। यह बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, और नेपाल के कुछ हिस्सों की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग हैं। ये लोकगीत न केवल संगीतमय अभिव्यक्ति का माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक मूल्यों को संरक्षित करने और पीढ़ियों तक पहुँचाने का सशक्त साधन भी हैं।

(क) सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक:-बिहारी लोकगीत बिहार और मिथिला की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को दर्शाते हैं। प्रत्येक उपभाषा के लोकगीत (जैसे भोजपुरी की कजरी, मैथिली की सामाचकेवा, मगही की फगुआ) स्थानीय परंपराओं, भूगोल, और जीवनशैली को प्रतिबिंबित करते हैं।इन सभी गीतों में वहां के गौरवशाली संस्कृति एवं परंपरा दिखलायी पड़ती है।

(ख) ऐतिहासिक निरंतरता:- ये गीत प्राचीन मगध और मिथिला की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं। उदाहरण के लिए, मगही लोकगीतों में बौद्ध और जैन परंपराओं का प्रभाव देखा जाता है, जबकि मैथिली गीत विद्यापति की भक्ति और श्रृंगार परंपरा से प्रेरित हैं।वैश्विक उपस्थिति: भोजपुरी लोकगीत, विशेष रूप से, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, और कैरिबियाई देशों में 19वीं सदी के गिरमिटिया मजदूरों के माध्यम से फैले, जिससे बिहारी संस्कृति की वैश्विक पहचान बनी।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

(ग)सामाजिक एकता,सामुदायिकता को बढ़ावा एवं सामूहिक भागीदारी:- लोकगीत अक्सर सामूहिक अवसरों जैसे विवाह, जन्म, त्योहार (होली, छठ, सामाचकेवा), और खेती (रोपनी, जतसार) के दौरान गाए जाते हैं। ये गीत समुदाय को एकजुट करते हैं और सामाजिक बंधनों को मजबूत करते हैं।(सामाजिक संदेश: बिरहा (भोजपुरी) और कथा गीत (मगही) जैसे लोकगीत सामाजिक मुद्दों, नैतिकता, और ऐतिहासिक घटनाओं को कथात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे समुदाय में जागरूकता और मूल्यों का प्रसार होता है।हास्य और मनोरंजन: विवाह गीत (जैसे बटगमनी, गारी) और उत्सव गीत (फगुआ) में हास्य और चटपटे संवाद समुदाय में खुशी और उत्साह का माहौल बनाते हैं।

(घ) परंपराओं और रीति-रिवाजों का संरक्षण एवं जीवन चक्र से जुड़ाव:,- बिहारी लोकगीत जीवन के विभिन्न चरणों–जन्म (सोहर), विवाह (बटगमनी, गारी), और मृत्यु (श्राद्ध गीत)–से जुड़े हुए हैं। ये गीत रीति-रिवाजों को जीवित रखते हैं और पीढ़ियों तक उनकी प्रासंगिकता बनाए रखते हैं।त्योहारों का उत्सव: छठ, होली, सावन, और सामाचकेवा जैसे त्योहारों के लिए विशेष गीत (जैसे छठ गीत, कजरी, सामाचकेवा गीत) धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवंत बनाते हैं। उदाहरण के लिए, छठ पूजा के भोजपुरी गीत सूर्य देवता और गंगा नदी की भक्ति को व्यक्त करते हैं।

(च) मौखिक परंपरा:- लिखित साहित्य के अभाव में लोकगीत मौखिक रूप से कहानियों, मिथकों, और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करते हैं। मैथिली के मिथिला भक्ति गीत राम-सीता की कथाओं को जीवित रखते हैं। वर्तमान समय पर इस विधा पर प्राध्यापक और शोधार्थियों के द्वारा निरंतर शोध किया जा रहा है। विभिन्न संगठन इन गीतों का प्रकाशन करके इन्हें संरक्षित कर रहे हैं। वर्तमान समय में पाठ्यक्रम में भी इन्हें सम्मिलित किया गया है। जिनपर कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का भी प्रकाशन हो रहा है।नयी शिक्षा नीति के तहत मातृभाषा को बढ़ावा दिया गया गया है। जिससे भविष्य में बिहारी भाषा के लोकसाहित्य के विकसित होने की अपार संभावनाएं हैं।

(छ)भावनात्मक और सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति:-प्रेम और विरह: कजरी, चैता, और मैथिली के प्रेम गीत ग्रामीण जीवन में प्रेम, विरह, और रोमांस की गहरी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। ये गीत स्थानीय प्रकृति और जीवनशैली के साथ गहराई से जुड़े हैं।इन सभी गीतों में श्रृंगार पक्ष के विविध भाव के अतिरिक्त जीवन से जुड़े हुए विभिन्न पक्ष के चित्र परिलक्षित होते है।इन

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

गीतों में जीवन का सुख-दुख,प्रेम, संघर्ष,श्रम, प्रेरणा और लोक-संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना दिखलाई पड़ती है।

(ज)भक्ति और आध्यात्मिकता:- भोजपुरी के नचारी, मैथिली के भक्ति गीत, और मगही के धार्मिक गीत स्थानीय देवी-देवताओं (शिव, दुर्गा, गंगा) और भक्ति आंदोलन की भावना को दर्शाते हैं।सौंदर्य और कला: मैथिली लोकगीतों में मधुबनी चित्रकला की तरह काव्यात्मक और सौंदर्यपूर्ण शैली देखी जाती है, जबकि भोजपुरी गीतों की जीवंतता और ऊर्जा लोक नृत्य (जैसे झूमर) के साथ संयुक्त होती है।

(झ)आर्थिक और सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब:- ग्रामीण जीवन का चित्रण: रोपनी, जतसार, और कर्म गीत खेती और मेहनत से जुड़े हैं।जो बिहार के कृषि-आधारित समाज की जीवनशैली को दर्शाते हैं। ये गीत मेहनत और प्रकृति के साथ सामंजस्य को व्यक्त करते हैं। जिससे बिहार के निवासियों की पलायन की समस्या, उनके संघर्षमय और जुझारू जीवन के साथ आशावादी सोच दिखलाई पड़ती है।

(त) महिलाओं के लोकगीत- विशेष रूप से कजरी, सोहर, और ललना, महिलाओं की भावनाओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। ये गीत ग्रामीण महिलाओं की सृजनशीलता और सामाजिक योगदान को उजागर करते हैं।

(थ) सामाजिक टिप्पणी:- बिरहा और बटगमनी जैसे गीतों में सामाजिक रूढ़ियों, असमानता, और पारिवारिक जीवन पर हास्यपूर्ण या गंभीर टिप्पणियाँ होती हैं, जो समाज को आत्म-मंथन के लिए प्रेरित करते हैं।

(द) आधुनिक सांस्कृतिक प्रभाव और वैश्वीकरण:- भोजपुरी सिनेमा और संगीत: भोजपुरी लोकगीतों ने भोजपुरी फिल्म उद्योग और आधुनिक संगीत में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। पारंपरिक गीतों को आधुनिक धुनों में ढालकर नई पीढ़ी तक पहुँचाया जा रहा है, जैसे "रिंकिया के पापा" जैसे गाने।

(ध) सांस्कृतिक उत्सव और मंच:- मैथिली और मगही लोकगीत सांस्कृतिक समारोहों, साहित्यिक मेलों, और स्थानीय उत्सवों में प्रस्तुत किए जाते हैं, जो क्षेत्रीय गौरव को बढ़ावा देते हैं।

(न) प्रवासी समुदाय: भोजपुरी और मैथिली लोकगीत प्रवासी समुदायों में सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का साधन हैं। ये गीत विदेशों में बिहारी संस्कृति को जीवित रखते हैं।

(ट) शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण का मौखिक इतिहास:- ये लोकगीत बिहार के इतिहास, मिथकों, और सामाजिक परिवर्तनों का मौखिक दस्तावेज हैं। उदाहरण के लिए, बिरहा गीत ऐतिहासिक घटनाओं और वीरों की कहानियों को संरक्षित करते हैं।

(ठ) सांस्कृतिक शिक्षा: ये गीत नई पीढ़ी को स्थानीय भाषा, परंपराओं, और मूल्यों से जोड़ते हैं। स्कूलों और सांस्कृतिक संगठनों में लोकगीतों को बढ़ावा दिया जा रहा है।संरक्षण के प्रयास: विभिन्न सांस्कृतिक संगठन, जैसे मैथिली साहित्य परिषद और भोजपुरी अकादमी, आखर आदि लोकगीतों के दस्तावेजीकरण और रिकॉर्डिंग के लिए काम कर रहे हैं।

(4)चुनौतियाँ:-

इन गीतों में आधुनिकीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए कुछ लोग अश्ललीलता और द्विअर्थी संवाद वाले गीतों की रचना करके भोजपुरी संस्कृति एवं भाषा को प्रदूषित करने का काम कर रहे हैं।शरीकरण और पश्चिमी संगीत के प्रभाव से कुछ पारंपरिक लोकगीतों की लोकप्रियता, विशेष रूप से मगही, अंगिका, और वज्जिका में धीरे-धीरे कम हो रही है।

लिखित/प्रकाशित नहीं होने के कारण कई लोकगीत मौखिक परंपरा तक ही सीमित हैं और उनका लिखित या ऑडियो संरक्षण नहीं हुआ है। जिससे बहुत सारा लोकसाहित्य विलुप्त हो रहा है।इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में भाषाई दबाव का असर भी दिखलाई पड़ रहा है।हिन्दी और अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से बिहारी उपभाषाओं और उनके लोकगीतों का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित हो रहा है।अच्छी बात यह है कि नयी पीढ़ी इन चुनौतियों का डटकर सामना कर रही है और अपनी लोकभाषा और लोक-संस्कृति को बचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

शोध प्रविधि:-

प्रस्तुत शोध पत्र में विषय से संबंधित पुस्तकावलोकन के पश्चात विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के शोध आलेख का अध्ययन किया गया है। जिसमें आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। समस्त उपलब्ध पाठ्य सामग्री के मूल भाव को व्यक्त करते हुए उसे नये सिरे से विवेचनात्मक विधि का उपयोग करते हुए शोध-पत्र तैयार किया गया है।

निष्कर्ष :-

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

बिहारी लोकगीत बिहार और मिथिला की सांस्कृतिक आत्मा हैं। भूमंडलीकरण , पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और आधुनिकता की लहर के बावजूद बिहारी हिन्दी की लोकगीत सिर्फ भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व के अधिकांश हिस्सों में लोकप्रिय है।ये लोकगीत सामाजिक एकता, परंपराओं, और भावनात्मक अभिव्यक्ति को जीवित रखे हुए हैं। ये गीत ग्रामीण जीवन की सादगी, भक्ति, और सौंदर्य को दर्शाते हैं, साथ ही वैश्विक मंच पर बिहारी संस्कृति को पहचान दिलाते हैं। भोजपुरी के जीवंत गीत हों, मैथिली की काव्यात्मक भक्ति, या मगही की ऐतिहासिक कथाएँ–ये सभी बिहारी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करते हैं। इन लोकगीतों का संरक्षण और प्रचार न केवल सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए, बल्कि भावी पीढ़ियों को उनकी जड़ों से जोड़ने के लिए भी आवश्यक है।कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत की गौरवशाली लोक-संस्कृति को विकसित करने और लोकप्रिय बनाने में बिहारी भाषा के लोकगीतों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ :-

1.उपाध्याय, कृष्णदेव - लोक संस्कृति की रुपरेखा,लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2019.

2. डॉ.सत्येन्द्र - लोकसाहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, द्वितीय संस्करण,2006

3.पीड़ित,डॉ.तैयब हुसैन- भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रुपरेखा,शब्द संसार,पटना, बिहार.

4.तिवारी उदय नारायण - भोजपुरी भाषा और साहित्य/बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, बिहार

5..उपाध्याय, कृष्णदेव, उपाध्याय डॉ.रविशंकर- भोजपुरी लोक-संगीत है/भारतीय लोक-संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी,उ.प्र.

6.चौहान, विद्या - लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्टभूमि/प्रगति प्रकाशन,आगरा-3,उ.प्र.

7.शास्त्री,डॉ.तेज नारायण लाल- मैथिली लोकगीतों का अध्ययन/विनोद पुस्तक भंडार/आगरा,,उ.प्र.

8.राकेश,श्री राम इकबाल सिंह- मैथिली लोकगीत- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,,उ.प्र.

9.सिंह,डॉ.रामप्रसाद - मगही लोकगीत के वृहद संग्रह -मगही अकादमी, पटना,बिहार

10.सिंह,रणधीर - भोजपुरी साहित्य का इतिहास और विकास.सूचना प्रकाशन, 2001.

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-4 | April - 2025 | Page 346-357

11.चट्टोपाध्याय, शरदचंद्र. "भोजपुरी साहित्य का इतिहास और संस्कृति." अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन.

12. त्रिपाठी,लक्ष्मणानंद- भोजपुरी साहित्य और संस्कृति: एक अध्ययन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1999.

13.भारती,धर्मवीर -भोजपुरी भाषा और साहित्य: एक इतिहास,2005.

14.सिंह,संजय कुमार-भोजपुरी संस्कृति और भोजपुरी साहित्य,आखर ई-पत्रिका

15.सम्मेलन पत्रिका - बिहार राजभाषा परिषद, पटना वर्ष जून 2002 अंक-52